नईदुनिया

प्रदर्शनकारियों के आगे गिड़गिड़ा रहे पीएम शहबाज ने की बातचीत की अपील

इस्लामाबाद

पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में लंबे समय से चल रहे उग्र विरोध प्रदर्शनों के बीच प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ का बड़ा बयान सामने आया है। इलाके में लगातार जारी बवालो और असंतोष के माहौल से घिरे पाकिस्तानी प्रधानमंत्री ने अब प्रदर्शनकारियों से बातचीत का रास्ता अपनाने की अपील की है।

पीओके में बवाल से घबराए पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ

उन्होंने स्पष्ट किया है कि सरकार क्षेत्र की जनता की शिकायतों और मांगों को सुलझाने के लिए पूरी तरह तैयार है, लेकिन इसके साथ ही उन्होंने अराजकता फैलाने वालों को कड़ी चेतावनी भी दी है।

प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने जोर देते हुए कहा कि किसी भी जटिल समस्या का समाधान संघर्ष या उपद्रव से नहीं, बल्कि बैठकर और आपसी बातचीत के जरिए ही निकाला जाना चाहिए। उन्होंने जाइंट अवामी एक्शन कमेटी (जेएएसी) के साथ संवाद स्थापित करने के संकेत दिए हैं और उम्मीद जताई है कि क्षेत्र में नई सरकार के गठन के बाद इस बातचीत की प्रक्रिया को और आगे बढ़ाया जाएगा।

उन्होंने कहा कि सरकार संवाद के दरवाजे बंद नहीं करना चाहती, बल्कि शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में कदम बढ़ाना चाहती है। हालांकि, एक तरफ जहां प्रधानमंत्री ने संवाद की पेशकश की है, वहीं दूसरी तरफ शांति व्यवस्था बिगाड़ने वालों को लेकर उन्होंने सख्त तेवर दिखाए हैं।

शरीफ ने चेतावनी दी है कि जो लोग इलाके में परेशानी खड़ी करने और अव्यवस्था फैलाने पर तुले हैं, उन्हें किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। सरकार का रुख बिल्कुल स्पष्ट है कि जो लोग शांतिपूर्ण तरीके से अपनी बात रखना चाहते हैं, उनका स्वागत है और उनके साथ चर्चा की जाएगी।

लेकिन यदि किसी ने हिंसा या उपद्रव का सहारा लिया, तो प्रशासन से सख्त कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा। शहबाज शरीफ ने दोहराया कि जो लोग धैर्य और सहनशीलता के साथ मुद्दों पर चर्चा करना चाहते हैं, सरकार उन्हें पूरा अवसर देगी। उनका उद्देश्य क्षेत्र में जबरदस्ती या दमन का माहौल बनाना नहीं, बल्कि समस्याओं का एक स्थायी और शांतिपूर्ण हल निकालना है। विश्लेषकों का मानना है कि PoK की सुलगती जनता के गुस्से को शांत करने के लिए प्रधानमंत्री की यह अपील दबाव की स्थिति में उठाया गया एक कूटनीतिक कदम है, ताकि बढ़ते राजनीतिक संकट को थामा जा सके।

न्यूज ब्रीफ

अरुणाचल में 27 जगहों के नाम बदलने पर भड़का चीन, भारत के कदम को ड्रैगन ने बताया गैरकानूनी

बीजिंग। भारत और चीन के बीच सीमा विवाद को लेकर तनाव एक बार फिर बढ़ने के संकेत मिल रहे हैं। भारत ने अरुणाचल प्रदेश में 27 स्थानों के नाम आधिकारिक रूप से बदल दिए हैं। इनमें झील, बस्तियां और ऐतिहासिक स्मारक शामिल हैं। भारत के इस कदम पर चीन ने कड़ी आपत्ति जताते हुए इसे अस्वीकार्य और गैरकानूनी करार दिया है। चीन का दावा है कि अरुणाचल प्रदेश का करीब 90 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र उसका हिस्सा है और वह इसे जंगनान' के नाम से संबोधित करता है। चीन की सरकार का कहना है कि भारत द्वारा इन क्षेत्रों के नाम बदलने से जमीन पर वास्तविकता नहीं बदलेगी। वहीं भारत लगातार स्पष्ट करता रहा है कि अरुणाचल प्रदेश देश का अभिन्न हिस्सा है और अपने क्षेत्र से जुड़े प्रशासनिक एवं आधिकारिक फैसले लेने का पूरा अधिकार भारत के पास है। भारत के अनुसार, चीन लंबे समय से अरुणाचल प्रदेश के विभिन्न स्थानों के नाम बदलने की कोशिश करता रहा है। वर्ष 2017 से चीन की ओर से इस तरह के कदम कई बार सामने आए हैं। अब भारत ने अरुणाचल प्रदेश सरकार की सलाह के आधार पर अपने आधिकारिक मानचित्रों में 27 स्थानों के सटीक नाम शामिल किए हैं। भारत के इस फैसले को चीन ने एकतरफा कार्रवाई बताया है। उसका कहना है कि अरुणाचल प्रदेश पर भारत का दावा स्वीकार्य नहीं है। दूसरी ओर, भारत ने चीन के इस दावे को आधारहीन बताते हुए खारिज किया है।

होर्मुज जलडमरूमध्य पर अमेरिका का 100% नियंत्रणः डोनाल्ड ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि होर्मुज जलडमरूमध्य पर इस समय सिर्फ

अमेरिकी नौसेना का नियंत्रण है। उन्होंने व्हाइट हाउस में एक कार्यक्रम के दौरान कहा, अभी होर्मुज जलडमरूमध्य पर केवल अमेरिकी नौसेना का नियंत्रण है। हमारी नाकाबंदी अचूक है। यह फौलाद की दीवार की तरह है। इस जलडमरूमध्य पर हमारा 100% (100 प्रतिशत) नियंत्रण है। गल्फ न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति ने कहा,' ईरान लड़ाई में पूरी तरह कंगाल हो चुका है। वह सैनिकों को वेतन नहीं दे पा रहा। वहां महंगाई दर 300% है। अमेरिका ने जलडमरूमध्य से बारूदी सुरंगों को हटा दिया है। यह जलडमरूमध्य अब गैरईरानी जहाजों के लिए खुला है। नाकाबंदी के तहत जहाजों को ईरानी बंदरगाहों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है।अन्य शिपिंग जारी है। महत्वपूर्ण है कि अमेरिकी नाकाबंदी पहली बार अप्रैल 2026 में लागू की गई थी। जून के मध्य में एक अंतरिम समझौते के तहत इसे अस्थायी रूप से हटा लिया गया। जहाजों पर हमलों के बाद जुलाई के मध्य में इसे फिर से लागू कर दिया गया है। इस बीच अमेरिकी मध्य कमान ने इस क्षेत्र में 20 से अधिक युद्धपोतों को तैनात करने और अगस्त की शुरुआत तक दर्जनों वाणिज्यिक जहाजों (हाल के आंकड़ों के अनुसार लगभग 55) का मार्ग बदलने की सूचना दी है। कमान ने कहा होर्मुज जलडमरूमध्य वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति के लिए एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील मार्ग बना हुआ है। ट्रंप की ताजा टिप्पणी ईरानी बंदरगाहों और तटीय क्षेत्रों से आने-जाने वाले समुद्री यातायात को लक्षित करने वाली अमेरिकी नौसैनिक नाकाबंदी के बीच आई है।

रूस की हिंद महासागर तक रेल मार्ग बनाने की महत्त्वाकांक्षा : सामरिक सुरक्षा पर ज़ोर

मास्को। रूसी उपप्रधानमंत्री मरात खुसनुलिन ने महत्त्वपूर्ण बयान में हिंद महासागर तक एक रेल

नेटवर्क बनाने की रूस की इच्छा जाहिर की है। उनका मानना है कि यह कदम होर्मुज और बास्फोरस जैसे रणनीतिक समुद्री मार्गों पर देश की निर्भरता को कम करेगा है, जो वर्तमान में बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के कारण जोखिम में हैं। यह प्रस्ताव तब आया है, जब पश्चिम एशिया में अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव ने होर्मुज जलडमरूमध्य से जहाजों की आवाजाही को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। यह जलडमरूमध्य वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति के लगभग पांचवें हिस्से के लिए महत्वपूर्ण कड़ी है। इस तरह, काला सागर को मारमारा सागर से जोड़ने वाला बास्फोरस जलडमरूमध्य भी भू-राजनीतिक चिंता का विषय बना हुआ है। इसके अलावा, पश्चिमी देशों द्वारा रूस के ऊर्जा निर्यात पर लगाए जा रहे दबाव और भारत जैसे देशों पर शुल्क लगाने के अमेरिकी सीनेट के प्रस्ताव ने रूस को वैकल्पिक व्यापार मार्गों की तलाश के लिए प्रेरित किया है। उपप्रधानमंत्री खुसनुलिन ने स्पष्ट किया कि तुर्कमेनिस्तान, ईरान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान से होकर गुजरने वाले वैकल्पिक मार्गों की तलाश होनी चाहिए।

वैज्ञानिकों ने खतरनाक ज्वालामुखी के नीचे खोजे दो सक्रिय मैग्मा चैंबर

मानागुआ

वैज्ञानिकों ने मसाया ज्वालामुखी के नीचे दो सक्रिय मैग्मा चैंबर खोजे गए हैं, जो निकारागुआ की राजधानी मानागुआ से केवल 20 किलोमीटर दूर है। मसाया ज्वालामुखी को लेकर इस नई रिसर्च ने दुनिया भर के वैज्ञानिकों की चिंता बढ़ा दी है। यह इलाका लगभग 20 लाख लोगों की आबादी का घर है, जिनकी जान पर भविष्य में किसी बड़े ज्वालामुखी विस्फोट का साया मंडरा रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार, मसाया का व्यवहार बेहद अजीब और रहस्यमय है, जिसका इतिहास आमतौर पर धीमे लावा प्रवाह का होता है, विनाशकारी और भयानक विस्फोटों के लिए जाना जाता है।

वैज्ञानिकों ने 2018 से 2024 तक सैटेलाइट रडार इमेजरी का उपयोग करके मसाया की गहराई से स्टडी की। इस विश्लेषण से पता चला कि मसाया के सैंटियागो क्रेटर के आसपास की जमीन में लगातार बदलाव हो रहे हैं; क्रेटर के उत्तर की जमीन पहले धंसी और फिर ऊपर उठने लगी। इसी ग्राउंड डिफार्मेशन ने दो मैग्मा चैंबर होने का ठोस सबूत दिया है। रिसर्चर्स ने बताया कि इतनी बड़ी आबादी के करीब होने के कारण मसाया के व्यवहार को समझना बेहद जरूरी है, खासकर जब यह पर्यटकों के बीच भी लोकप्रिय है। मसाया का इतिहास कम से कम चार बड़े काल्डेरा बनाने वाले प्लिनियन विस्फोटों से भरा है, जिसमें 6500 साल पहले का एक विस्फोट पिछले 10,000 सालों के सबसे बड़े विस्फोटों में से एक था। 16वीं सदी के मध्य से यह लगभग लगातार सक्रिय है, और इसका अचानक हिंसक रूप बदलना वैज्ञानिकों को डराता है।

इसके अलावा, मसाया से लगातार निकलने वाली जहरीली सल्फर डाइआक्साइड गैसें भी एक बड़ी समस्या बन चुकी हैं। यह पैसिव डीगैसिंग मानागुआ और आसपास के इलाकों में सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा जोखिम है, जहां हवा की गुणवत्ता अक्सर विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से काफी खराब रहती है। यह क्रानिक एक्सपोजर एक साइलेंट किलर की तरह काम कर रहा है। वैज्ञानिक मसाया और हवाई के किलाउएआ ज्वालामुखी में कई समानताएं बताते हैं, दोनों ही बेसाल्टिक ज्वालामुखी हैं और दोनों में लावा लेक गतिविधि देखी जाती है।

प्रशांत में उठा डाल्फिन तूफानः चीन-जापान में हड़कंप, भारत पर अप्रत्यक्ष असर

बीजिंग। पश्चिमी प्रशांत महासागर में उठा महाशक्तिशाली तूफान डाल्फिन इनदिनों चीन, जापान और ताइवान के लिए बड़ी आफत बनकर उभरा है। 216 किलोमीटर प्रति घंटे की अधिकतम रफ्तार तक पहुंच चुकी इसकी हवाएं इन देशों में भारी तबाही मचा रही हैं, जिसके चलते हजारों उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं और लाखों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। विशेषज्ञों ने भारत के मानसून पर भी इसके अप्रत्यक्ष प्रभाव की आशंका जाहिर की गई है, जिससे चिंता बढ़ गई है। जापान के दक्षिणी ओकिनावा क्षेत्र में इस तूफान का असर पहले ही दिखाई दे चुका है, जहां तेज हवाओं के कारण पांच बुजुर्ग लोग घायल हो गए और करीब 14 हजार इमारतों की बिजली गुल हो गई। अब डाल्फिन चीन के पूर्वी तट की ओर तेजी से बढ़ रहा है। शंघाई में 1300 से अधिक उड़ानें रद्द कर दी गई हैं, जबकि चीन ने करीब तीन लाख लोगों को एहतियातन दूसरी जगहों पर शिफ्ट किया है। चीन के झेजियांग और फुजियान प्रांतों को विशेष रूप से सतर्क किया गया है, जहां बंदरगाहों का संचालन रोक दिया गया है और यात्रियों के लिए चलने वाले 162 फेरी रूट निलंबित कर दिए गए हैं। निंगबो में भी स्कूलों सहित अन्य शैक्षणिक गतिविधियां रोक दी गई हैं और पानी से जुड़ी गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। ताइवान ने भी एहतियातन 63 अंतरराष्ट्रीय उड़ानें रद्द की हैं। मौसम विभाग ने पूर्वी झेजियांग के कुछ हिस्सों में 600 मिलीमीटर से भी अधिक भारी बारिश की आशंका जाहिर की गई है, जिससे बाढ़ और भूस्खलन का खतरा बढ़ जाता है। तूफान डाल्फिन के कारण पूर्वी चीन के तटीय इलाकों में कई दिनों तक तेज हवाओं और मूसलाधार बारिश का दौर जारी रहने की चेतावनी जारी की गई है, जिससे परिवहन और सामान्य जनजीवन बुरी तरह प्रभावित होने की आशंका है। यह तूफान अपने रास्ते में तेज समुद्री लहरों का खतरा भी पैदा कर रहा है। हालांकि डाल्फिन का सीधा खतरा भारत पर नहीं है, मौसम विशेषज्ञों का मानना है कि इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव भारतीय मानसून प्रणाली पर पड़ सकता है। यह शक्तिशाली तूफान पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र से बड़ी मात्रा में गर्मी और नमी को अपनी ओर खींच सकता है।

पाकिस्तान में चरम पर बगावत के बीच सैन्य तख्तापलट की अटकलें

इस्लामाबाद

पाकिस्तान इस समय गंभीर और चौतरफा संकट से गुजर रहा है, जिससे देश गृहयुद्ध की कगार पर पहुंच गया है। एक तरफ जहां बलूचिस्तान में बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने पाकिस्तानी सेना के खिलाफ आक्रामक मोर्चा खोल रखा है, वहीं खैबर पख्तूनख्वा में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) लगातार सुरक्षा बलों को निशाना बना रहा है। इसके अलावा, पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले पीओके में जाइंट अवामी एक्शन कमेटी के नेतृत्व में जनता का गुस्सा फूट पड़ा है और लोग पाकिस्तान से अलग होने की मांग कर रहे हैं।

इस अभूतपूर्व आंतरिक संकट के बीच इस्लामाबाद से लेकर रावलपिंडी के सैन्य मुख्यालय तक इस बात की चर्चा तेज है कि क्या सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर देश में तख्तापलट करने वाले हैं राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की लाचार सरकार से देश संभल नहीं रहा है, ऐसे में मुनीर खुद चीफ मार्शल ला एडमिनिस्ट्रेटर बनने का मन बना सकते हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, आईएसआई मुख्यालय में हुई उच्चस्तरीय बैठकों में भी इस बात पर मंथन चल रहा है कि मौजूदा राजनीतिक तंत्र पूरी तरह विफल हो चुका है। बलूचिस्तान में बीएलए ड्रोन तकनीक और आधुनिक हथियारों का इस्तेमाल कर सैन्य ठिकानों और चीन-पाकिस्तान इकोनामिक कारिडोर (सीपीईसी) प्रोजेक्ट्स को भारी नुकसान पहुंचा रही है, जिससे पाकिस्तानी सेना बैकफुट पर आ गई है। वहीं, पीओके में दशकों के दमन के बाद जनता खुलेआम बगावत कर चुकी है। खैबर पख्तूनख्वा में टीटीपी के बढ़ते हमलों ने पाक सेना की नाक में दम कर रखा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि हालात ऐसे ही रहे, तो जनरल मुनीर अय्यूब खान और परवेज मुशर्रफ की तर्ज पर सत्ता अपने हाथ में ले सकते हैं। वे पहले आपातकाल लगवाकर संसद को कमजोर कर सकते हैं और फिर देश को टूटने से बचाने का बहाना बनाकर शहबाज सरकार को बर्खास्त कर मार्शल ला लागू कर सकते हैं। इतिहास गवाह है कि पाकिस्तानी तानाशाह अपनी नाकामियों से ध्यान भटकाने के लिए हमेशा भारत विरोधी रुख अपनाते हैं, इसलिए भारत भी इस स्थिति पर पैनी नजर रखे हुए है।

हिलती रही बिल्डिंग, गिरते रहे मेडिकल उपकरण, न ही मरीज को छोड़ न ही भागे

टोक्यो। जापान में 28 जुलाई को कुमामोटो प्रीफेक्चर में आए 7.1 तीव्रता के भूकंप के दौरान कुमामोटो जनरल हास्पिटल में चार सर्जरी चल रही थीं। आपरेशन थिएटर में लगे सीसीटीवी कैमरों ने उस पल को रिकार्ड कर लिया, जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में देखा जा सकता है कि आपरेशन के दौरान अचानक पूरा कमरा हिलने लगता है। मेडिकल उपकरण जोर-जोर से डगमगाने लगते हैं। इसके बावजूद डाक्टर आपरेशन थिएटर छोड़कर बाहर नहीं भागते। वे मरीज के चारों ओर खड़े होकर उसे सुरक्षित रखने की कोशिश करते हैं, ताकि किसी तरह का नुकसान न हो। रिपोर्ट के मुताबिक एक नर्स फौरन आपरेशन थिएटर का दरवाजा खोल देती है, ताकि जरूरत पड़ने पर सुरक्षित निकासी का रास्ता उपलब्ध हो। संकट की उस घड़ी में मेडिकल टीम की सूझबूझ और संयम ने लोगों को प्रभावित किया। अस्पताल प्रशासन के मुताबिक भूकंप के समय चार आपरेशन चल रहे थे। राहत की बात यह रही कि सभी सर्जरी सफलतापूर्वक पूरी हुई और किसी भी मरीज को कोई नुकसान नहीं पहुंचा।

जापान में भीषण गर्मी से राहत दिलाएगा ह्यूमन रेफ्रिजरेटर, जापान के कई शहरों में तापमान 40 डिग्री के पार

टोक्यो

यूरोप के बाद अब भीषण गर्मी का कहर जापान तक पहुंच गया है, जहां कई इलाकों में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक दर्ज किया जा रहा है। बढ़ती गर्मी और हीटस्ट्रोक के खतरे से लोगों को बचाने के लिए जापान में एक अनूठी तकनीक तैयार की गई है, जिसे ह्यूमन रेफ्रिजरेटर कहा जा रहा है। यह एक विशेष प्रकार का कूलिंग बूथ है, जिसे जापान की एक कंपनी ने इस साल अप्रैल में बाजार में उतारा है। स्टेनलेस स्टील से बने इस सिंगल-सीटर बूथ को खासतौर पर उन कार्यस्थलों और निर्माण स्थलों के लिए डिजाइन किया गया है, जहां भीषण गर्मी में काम करने वाले मजदूरों के लिए पूरा एयर-कंडीशंड कमरा बनाना संभव नहीं होता।

जापान में इस साल गर्मी ने कई पुराने रिकार्ड तोड़ दिए हैं, जिससे टोक्यो समेत कई शहरों में सैकड़ों लोगों को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा है। इससे पहले जापान में मजदूर फैन जैकेट का इस्तेमाल करते थे, लेकिन तापमान 38 डिग्री से ऊपर जाने पर वे बेअसर साबित होने लगे। ऐसे में ह्यूमन रेफ्रिजरेटर एक बेहतर विकल्प के रूप में सामने आया है। इसमें बैठकर दरवाजा बंद करने के बाद यह मशीन बूथ के अंदर का तापमान लगभग 15 डिग्री सेल्सियस तक कम कर देती है और 5 डिग्री सेल्सियस ठंडी हवा छोड़ती है। यह ठंडी हवा

सिर, गर्दन और कंधों पर पहुंचकर शरीर की गर्मी को तेजी से कम करती है। कंपनी का दावा है कि इस बूथ में मात्र 5 मिनट रहने पर ठंडक महसूस होने लगती है और 10 मिनट का कूलिंग सेशन शरीर के तापमान को सामान्य कर देता है। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए 20 मिनट बाद ठंडी हवा आना अपने आप बंद हो जाती है। कम बिजली की खपत करने वाला यह बूथ वेयरहाउस और भीड़भाड़ वाली जगहों के लिए काफी उपयोगी साबित हो रहा है। हालांकि, पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि यह तकनीक भले ही तात्कालिक राहत देती है, लेकिन ग्लोबल वार्मिंग जैसी मूल समस्या का स्थायी समाधान नहीं है। इसके लिए शहरों की बेहतर योजना, अधिकाधिक पौधे लगाना और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ कड़े कदम उठाना बेहद जरूरी है।

नेपाल के जंगलों में मिला किंग कोबरा का घोंसला

काठमांडू

हाल ही में नेपाल के जंगलों में दुनिया के सबसे दुर्लभ सांपों में से एक किंग कोबरा का घोंसला मिला है। इस घोंसले में 30 से 40 अंडे होने की उम्मीद है, जिससे इस विलुप्तप्राय प्रजाति के संरक्षण की उम्मीदें बढ़ गई हैं। यह खोज इसलिए भी खास है क्योंकि किंग कोबरा दुनिया का एकमात्र ऐसा सांप है जो अपने अंडों के लिए घोंसला बनाता है। किंग कोबरा, जो अपनी विषाक्तता और रहस्यमयी प्रकृति के लिए जाना जाता है, अब विलुप्त होने की कगार पर है और ऐसे में उसके घोंसले का मिलना वन्यजीव प्रेमियों और संरक्षणवादियों के लिए एक बड़ी खबर है। यह दुर्लभ घोंसला 15 जुलाई को घोराही उप-महानगरपालिका-18 के अम्बे सामुदायिक वन में झाक्री सोटा के पास मशरूम इकट्ठा कर रहे स्थानीय

लोगों को दिखाई दिया। अम्बे सामुदायिक वन के अध्यक्ष भंडारी ने को बताया कि घोंसला मिलने के बाद, सांप संरक्षण के लिए काम कर रहे कुलदीप न्यूपाने की मदद से उस जगह को तुरंत सुरक्षित कर लिया गया।

न्यूपाने पिछले चार वर्षों से इस क्षेत्र में सांपों को बचाने और उनके संरक्षण में सक्रिय हैं। सुरक्षा के मद्देनजर, घोंसले के आसपास लोगों की आवाजाही को सीमित कर दिया गया है और स्थानीय निवासियों को फिलहाल इस इलाके में घास, जलाऊ लकड़ी या मशरूम इकट्ठा करने से रोक दिया गया है ताकि कोबरा और उसके अंडों को किसी प्रकार की अशांति न हो।

सांपों पर शोध करने वाले और संरक्षणवादी बसंत सुबेदी ने बताया कि मादा किंग कोबरा सूखी पत्तियों, टहनियों और अन्य वनस्पतियों का उपयोग करके सावधानी से अपना घोंसला बनाती हैं। वे अंडे से बच्चे निकलने तक, जो आमतौर पर दो से तीन महीने में होते हैं, घोंसले में ही रहती हैं। एक मादा किंग कोबरा आमतौर पर 30 से 40 अंडे देती है। यह प्रजाति 18 फीट (5.5 मीटर) से अधिक लंबी हो सकती है और इसे दुनिया का सबसे लंबा जहरीला सांप माना जाता है।

111 साल की चीनी महिला वांग ने बताए लंबी उम्र के अनोखे राज

बीजिंग। पूर्वी चीन के जिआंगसू प्रांत की रहने वाली 111 साल की वांग गाइयिंग इन दिनों सोशल मीडिया पर अपनी लंबी उम्र और अनोखे जीवन जीने के तरीकों को लेकर काफी चर्चा में हैं। उनका मानना है कि लंबी और स्वस्थ उम्र का कोई महंगा नुस्खा नहीं है, बल्कि यह रोजमर्रा की अच्छी आदतों और जीवनशैली पर निर्भर करता है। वांग 100 साल की उम्र पार करने के बाद भी खेतों में मूंगफली और तरबूज की फसल काटने में मदद करती थीं। अब बढ़ती उम्र के कारण उनकी चाल धीमी हो गई है, लेकिन वह टेबल साफ करने और कपड़े तह करने जैसे छोटे-मोटे घरेलू काम खुद करना पसंद करती हैं। उनका मानना है कि सक्रिय रहने से शरीर में खून का प्रवाह बेहतर बना रहता है। शारीरिक सक्रियता के अलावा, वांग मानसिक शांति को भी दीर्घायु का मुख्य आधार मानती हैं। उनका नियम है कि हर दिन कम से कम एक अच्छा काम करना चाहिए, जैसे अपनों की तारीफ करना या किसी दोस्त को संदेश भेजना। इसके अलावा, वह तनाव को कभी भी अपने ऊपर हावी नहीं होने देतीं। परेशानियों को लेकर देर तक सोचने के बजाय वह सोना पसंद करती हैं और उनका मानना है कि गुस्से या तनाव को कभी भी बिस्तर पर नहीं ले जाना चाहिए। पर्याप्त नींद लेने से उनकी कई चिंताएं खुद-ब-खुद दूर हो जाती हैं। वह रात में करीब 12 घंटे की नियमित नींद लेती हैं और दिन में भी छोटी झपकी लेती हैं।